



जान संपादकीय

कर्नाटक में चुनाव

४ अगस्त २०१८

आई। बैंजामिन नेतन्याहू के लिए बीबी घर जाओ के नारे लगने लगे, बीबी नेतन्याहू का प्रचलित नाम है। नेतन्याहू के राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी इन विरोध प्रदर्शनों की अगुआई कर रहे हैं, लेकिन इसमें उनके साथ नेतन्याहू के कई समर्थक, श्रम संगठन और रिजर्व सेना के लोग भी आ गए हैं। विरोधियों का कहना है कि सरकार ने न्यायपालिका से जुड़े कानून में जो बदलाव की कोशिश की है उससे देश के लोकतंत्र को गंभीर खतरा पैदा हो सकता है। सरकार न्यायिक व्यवस्था को कमज़ोर करना चाहती है। जबकि देश में इसका इतिहास सरकारों पर अंकुश लगाए रखने का रहा है। इजरायल के कई बड़े शहरों में विरोध का दायरा बढ़ता गया और आखिरकार बैंजामिन नेतन्याहू को कहना पड़ा कि वह विवादास्पद बन चुका अस उन्माधा है। निवार की विरोधी सत्ता हो गई है। लोकतंत्र हो गया है। जनता सवाल करना लगा रखता है।

इन न्यायिक सुधार कानूनों पर आयी रूप से रोक लगा रहे हैं। ने कहा कि जब बातचीत के में से गृहयुद्ध से बचने का विकल्प है, तो मैं बातचीत के लिए समय ल लेता हूँ। यह राष्ट्रीय जिम्मेदारी से ऐलान कैं बाद अब सड़कों से भी लॉटैने लगे हैं और इसे लोकतंत्र गढ़ी जीत के तौर पर देखा जा रहा नहीं भी देश सच्चे अर्थों में तभी तात्परिक रह सकता है, जब वहां पर अंकुश लगाने की व्यवस्था इस व्यवस्था को स्वतंत्र पालिका, मजबूत विपक्ष और अंतिक अधिकारों से ही बनाया जा गा है। इनमें से कोई भी पक्ष ने तो हो तो लोकतंत्र पर आंच आने लाए हैं, सत्ता के निरंकुश होने का बढ़ने लगता है। इजरायल में नेतृत्वाहू ने रास्ता बानो जनता, विपक्ष कुछ लोगों बनने से रोक बाद भविष्य लोकतंत्र में आचरण कर तानाशाही दी है। जर्मनी क्या खामियां देखा है। उसकी की यही साधन है, जहां शासक से अधिक सिफर लॉकडाउन असॉल्ट राइफल हाल ही में

संज्ञ
यह तो सच सभ्यता का सम्मान और आशावादी सभ्यता और के विभिन्न सेवा पर मूल्यों की मूल्यों का विस्तार की तरह का आधारभूत धन की आवश्यकता है, पर और विकास की विकास कर सकता परिस्थितियों, दर्शन तथा स्थापनाओं समकालीन संकलन की जीवनविकासवान हो।

वैश्विक बैंकिंग संकट का तकनीकी रोजगार पर असर

के रवींद्रन

नौकरी के परिवह्य पर बैंकिंग संकट का पूर्ण प्रभाव अभी तक स्पष्ट नहीं है। इस संकट ने वैश्विक बैंकों के शेयर की कीमतों में छठे स्थान पर गिरावट देखी है। शेयर की गिरती कीमतों का बैंकों के संचालन पर महत्वपूर्ण असर पाया गया है, जिसमें क्रेडिट और डिपॉजिट शामिल हैं, ज्योंके एक तरफ ऋण वितरण कम हो जाता है और जमाकर्ता अपने पैसे को सुरक्षित आश्रयों में लगाने के लिए वापस ले लते हैं। यह तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है कि वैश्विक बैंकिंग संकट ने अभी एक छोटी सी भी भूमिका नहीं निभाई है। यद्यपि दिवालियापन और इसी तरह के परिणामों की ओर ले जाने वाले तात्कालिक नतीजे कुछ हद तक कम हो गये हैं, बदतर स्थिति आने की आशंकाएं अभी भी बनी हुई हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी की संभावनाएं पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट हैं। सरल शब्दों में, जब लोगों को आगे परेशानी का डर होता है, तो वे पैसा खर्च करना बंद कर देते हैं, जो एक चेन रिएक्शन सेट करता है जो हर आर्थिक गतिविधि को प्रभावित करता है। फिर यह अर्थव्यवस्था के हर स्तर पर परिलक्षित होता है, जिसमें ऋण, पूँजी और निवेश शामिल हैं, जिनका पर्याप्त अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता ह। मंदी ने अब तक भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपनी छाया उतनी नहीं डाली है, जितनी इसने अन्यत्र डाली है, ज्योंकि इसने एक ऐसे बाजार के आधार पर अंतर्निहत ताकत के कारण विशिष्ट लचीलापन दिखाया है ज्योंकि भारतीय बाजार इतना बड़ा है मानो यह अपने आप में एक दुनिया हो। लेकिन ऐसे क्षेत्र हैं जहां भारतीय बाजार की यह दुनिया विश्व बाजार की बड़ी दुनिया के साथ इस हद तक विलीन हो जाती है कि सीमाएं ऊस्किल से पहचानी जा सकती हैं। जब प्रौद्योगिकी, ई-कॉमर्स, सेवा आदि जैसे क्षेत्रों की बात आती है तो एकीकरण पूर्ण हो जाता है। इसलिए, वैश्विक कंपनियां के

लिए निहितार्थ वाले किसी भी विकास का भारत पर भी प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, कंसल्टेंसी दिग्गज एक्सेंचर के सभी कर्मचारियों का 40 प्रतिशत भारत में स्थित है और कंपनी ने अभी-अभी अपने कार्यालय को कम करने की योजना की घोषणा की है और यह गगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजॉन, टिवटर, और मेटा सहित लगभग हर दूसरी दिग्गज कंपनी के लिए सच है। अमेरिकी बैंकिंग संकट इस प्रक्रिया में कंपनियों की एक और परत जोड़ सकता है, ब्यांकिंग अधिकारी प्रमुख खिलाड़ियों ने अपने बैंक-एंड संचालन को भारत में आउटसोर्स कर दिया है। नौकरी में कटौती के बारे में नवीनतम आकड़ों के अनुसार, 2023 के केवल तीन महीनों में छंटनी पूरे 2022 में की गई छंटनी के स्तर को पार कर गई है। इस साल 1 जनवरी से 23 मार्च के बीच कुल 518 तकनीकी कंपनियों ने 1,71,858 कर्मचारियों की छंटनी की है। 2022 में 61,411 कर्मचारियों को नौकरियों से निकाला गया था। 2023 में अब तक, अमेजॉन ने तीन चरणों में सबसे अधिक कर्मचारियों - 27,000 को नौकरी से

निकाल दिया है। इसके बाद मेटा ने दो चरणों में 21,000 कर्मचारियों की छंटनी की और एकसेंचर ने 19,000 कर्मचारियों को नौकरियों से निकाल दिया। इसी तरह, गगल ने 12,000 नौकरियों, माइक्रोसॉफ्ट ने 10,000, एरिक्सन ने 8,500, सेल्सफोर्स ने 8,000, डेल 6,650 और फ़िलिप्स ने 6, की कटौती की। इस 1,52,858 कर्मचारियों की यह एकसेंचर द्वारा नौकरियों के कटौती के अतिरिक्त था। नौकरी पर बैंकिंग संकट का पूर्ण प्रभाव स्पष्ट नहीं है। इस संकट ने वैश्व शेयर की कीमतों में छठे स्थान देखा है। शेयर की गिरती की के संचालन पर महत्वपूर्ण 3% है, जिसमें क्रोडिट और डिट्रॉइट है, क्योंकि एक तरफ ऋण जाता है और जमाकर्ता 3% सुरक्षित आश्रयों में लगाने के

भारत में गामग उद्योग
वर्तमान में लगभग 50,000
लोगों को रोजगार देता है, जिसमें
प्रोग्रामर और डेवलपर्स 30 प्रतिशत
र्याबिल के लिए जिम्मेदार हैं। स्टाफिंग फर्म
टीमलीज डिजिटल की एक नई रिपोर्ट के
अनुसार, इस उद्योग के 20-30 प्रतिशत
तक बढ़ने और इस वित्तीय वर्ष के अंत
तक एक लाख नये प्रत्यक्ष और
अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित करने
की उम्मीद है।

ब्लॉकबस्टर 2021 से काफी उलटफेर हुआ है जब बैंकरों को बड़े वेतन बम्प प्राप्त हुए थे। समूह इस वर्ष वार्षिक बोनसेस पूल में भी भारी कटौती कर रहा है। रयटर्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, यह 2021 में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले निवेश बैंकरों के लिए 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत की वृद्धि के विपरीत है। ट्रेड यूनियनों ने तकनीकी दिग्गजों द्वारा छंटनी पर सवाल उठाते हुए कहा है कि कंपनियां ऐसा काम कर रही हैं जैसे वे भारतीय कानूनों से ऊपर हो। औद्योगिक विवाद अर्थनीयम के प्रावधानों के अनुसार, नियोक्ता उपर्युक्त सरकार की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी कर्मचारी की छंटनी नहीं कर सकता है। इसका मतलब यह है कि जिन कर्मचारियों ने कम से कम एक साल तक लगातार सेवा की है, उन्हें तब तक नहीं हटाया जा सकता है जब तक कि उन्हें तीन महीने पहले नोटिस नहीं दिया जाता है और उपर्युक्त सरकार से पूर्व अनुमति नहीं मिलती है, यूनियनों ने तर्क दिया है। ऐसे उदास परिवहन में शायद एकमात्र उम्मीद की किरण है ऑनलाइन गेमिंग स्पेस में उभर रहे तकनीकी विशेषज्ञों के लिए नौकरी के नए अवसरों की संभावना। भारत में गेमिंग उद्योग वर्तमान में लगभग 50,000 लोगों को रोजगार देता है, जिसमें प्रोग्रामर और डेवलपर्स 30 प्रतिशत कार्यबल के लिए जिम्मेदार हैं। स्टार्टिपिंग कर्म टीमलीज डिजिटल की एक नई रिपोर्ट के अनुसार, इस उद्योग के 20-30 प्रतिशत तक बढ़ने और इस वित्तीय वर्ष के अंत तक एक लाख नये प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित करने की उम्मीद है। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रोग्रामिंग, टेस्टिंग, एनिमेशन और डिजाइन सहित सभी क्षेत्रों में नौकरी के नये अवसर उपलब्ध होने की उम्मीद है। भारत के गेमिंग उद्योग ने मोबाइल गेमिंग सेगमेंट में सबसे बड़ी स्वीकृति देखी है। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में स्मार्टफोन आधारित गेमिंग में शानदार वृद्धि देखी गई है।

बिलकिस बानोः मंच पर बलात्कारी

2002 में गांधरा काड़ के बाद समूहान्त्र बलात्कार की शिकार बिलकिस बानी 2003 साल बाद भी इंसाफ के इंतजार में है, अमृतकाल के भारत की हकीकत है। उनके दोषियों की रिहाई के खिलाफ दायर याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई चल रही है और अदालत ने इस पर सरकार जवाब मांगा है। सरकार क्या जवाब देता है, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता लेकिन इस बीच उनके दोषियों में से एक शैलेश भट्ट को गुजरात में एक सरकारी कार्यक्रम में भाजपा के दाहोद सांसद जसवंतसिंह भाषण और लिमखेड़ा भाजपा विधायक उनके भाई शैलेश भाषण के साथ मंच पर देखा गया। दाहोद जिले में गुजरात जल आपूर्ति और सीधेरेज बोड परियोजना के शिलान्यास समारोह में शैलेश भट्ट बाकायदा बाबा अतिथियों के साथ मंच पर विराजमान थे खुद सांसद जसवंत सिंह ने इस सरकारी कार्यक्रम की तस्वीरें ट्रिवटर पर साझी। बलात्कार और हत्या के एक दोषी व सरकारी आयोजन में उपस्थिति पर सवाल उठे, तो इस पर सांसद महोदय ने तो कुनै नहीं कहा, लेकिन उनके भाई शैलेश भाषण ने कहा कि विधायक होने के नाम मैं इस कार्यक्रम में इतना व्यस्त था कि मैं यह नहीं देखा कि मंच पर और कौन बैठा है। वहीं दाहोद जिले के प्रशासनिक अधिकारियों ने कहा कि उन्हें जानकारी नहीं है कि भट्ट को कार्यक्रम में किसका आमंत्रित किया था। कमाल का सरकारी आयोजन रहा होगा, जिसमें आमंत्रितों व जानकारी आयोजकों को नहीं थी। शैलेश भट्ट अगर मंच पर उपस्थित था, तो निश्चिह्नी ही उसका स्वागत भी हुआ होगा, क्योंकि अमूमन सकारी कार्यक्रमों में ऐसा नहोता है। उसका नाम भी पुकारा ही गया होगा, और अगर नाम न भी लिया गया है, तो क्या मंच पर उसे देखकर किसी ने वहाँ से उसे हटाने की जहमत नहीं उठाई।

三

Digitized by srujanika@gmail.com

हस्सा ह, जिसमें वा रहत ह। इसलिए बिलकिस बानो के दोषियों की रिहाई पर बहुत से लोगों को फर्क ही नहीं पड़ा, न ही उनका स्वागत देखकर यह विचार उठा कि क्या हमारे यहीं संस्कार रह गए हैं कि अब बलात्कार करने वालों का स्वागत हो। वैसे इन लोगों को भाजपा के एक विधायक ने संस्कारी बताया था और भाजपा ने उन्हें फिर से इन चुनावों में टिकट दी थी। वैसे बिलकिस बानो के दोषियों की रिहाई पर बहुत से लोगों ने आक्रोश भी जाहिर किया था। कम से कम 6,000 लोगों ने सुप्रीम कोर्ट से दोषियों की सजा माफी का निर्णय रद्द करने की अपील की थी। खुद बिलकिस बानो ने अपनी वकील के जरिये जारी एक बयान में गुजरात सरकार से इस फैसले को वापस लेने की अपील की थी। और अब सुप्रीम कोर्ट फिर से इस पर सुनवाई कर रहा है। बिलकिस बानो का यह संघर्ष कब और किस मुकाम पर जाकर खत्म होगा, यह देखना हांगा। उनकी और उनके परिजनों की हिम्मत की जितनी तारीफ की जाए, कम है। क्योंकि कमजोर लोग तो शाब्दिक प्रहारों से ही ऐसे आहत हो जाते हैं कि उन्हें अपनी मानहानि लगने लगती है। बिलकिस बानो ने तो शाब्दिक ही नहीं, मानसिक और शारीरिक प्रताड़नाएं भी सहन की हैं। कल मन की बात के 99वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने कहा कि आज, भारत का जो सामर्थ्य नए सिरे से निखरकर सामने आ रहा है, उसमें बहुत बड़ी भूमिका हमारी नारी शक्ति की है। नारी शक्ति की ऊर्जा ही विकसित भारत की प्राणवायु है। उन्होंने आस्कर के मर्च से लेकर खेल के मैदान और सेना से लेकर राजनीति तक महिलाओं की उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्हें बिलकिस जैसी तमाम महिलाओं का भी जिक्र कभी करना चाहिए, जो 20-22 साल बाद भी इंसाफ की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करती हैं।

इजरायल से उम्मीद को किरण

रक्षा, अनुसंधान, खुफिया तर, तमाम लिहाज से दुनिया में अग्रणी और मजबूत माने जाना वाला देश इजरायल इस वक्त असुरक्षा के खतरे से ज़दा रहा है। दरअसल इजरायल की सड़कों पर वहाँ की जनता सरकार के खिलाफ उत्तर आई है और इस विरोध प्रदर्शन में जनता के साथ रिंजव सेना के लोग भी उत्तर आए हैं। वे कार्य पर नहीं जा रहे हैं। इससे इजरायल की सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया है। यह सब न्यायपालिका की स्वतंत्रता और लोकतंत्र की रक्षा के लिए हो रहा है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू पर भ्रष्टाचार के कई आरोप लगे हुए हैं। वे सत्ता में तो आ गए हैं, लेकिन उनकी सरकार न्यायपालिका में बदलाव लाने वाले न्यायिक सुधार कानूनों को लाने की तैयारी में थी। इसका विरोध करने वाला का आशका है कि इन के लागू होते ही न्यायपालिका के अधिकार कम हो जाते। इजरायल की संसद के पास साधारण बहुमत से सुप्रीम कोर्ट के फैसलों को रद्द करने की शक्ति होती, मौजूदा सरकार को बिना किसी डर के कानून पारित करने की ताकत मिल सकती थी और सबसे बड़ी बात कि इस कानून का उपयोग प्रधानमंत्री नेतन्याहू पर चल रहे मुकदमों को खत्म करने के लिए भी किया जा सकता था। बेंजामिन नेतन्याहू ने पिछले साल नवंबर में बड़ी मुश्किल से सत्ता में वापसी की है। इससे पहले 2021 के जून में उन्हें भ्रष्टाचार के मामलों के कारण पद छोड़ना पड़ा था। नेतन्याहू सरकार ने जैस ही न्यायिक सुधार कानून लाने की तैयारी तेज की, इजरायल की जनता सड़कों पर उत्तर

आइ बजामन नेतन्याहू के लिए बाबा
घर जाओ के नारे लगने लगे, बीबी
नेतन्याहू का प्रचलित नाम है। नेतन्याहू
के राजनीतिक प्रतिदंडी इन विरोध
प्रदर्शनों की अगुआई कर रहे हैं, लेकिन
इसमें उनके साथ नेतन्याहू के कई
समर्थक, श्रम संगठन और रिंजर्स सेना
के लोग भी आ गए हैं। विरोधियों का
कहना है कि सरकार ने न्यायपालिका
से जुड़े कानून में जो बदलाव की
कोशिश की है उससे देश के लोकतंत्र
को गंभीर खतरा पैदा हो सकता है।
सरकार न्यायिक व्यवस्था को कमज़ोर
करना चाहती है। जबकि देश में इसका
झित्हास सरकारों पर अंकुश लगाए
रखने का रहा है। इजरायल के कई बड़े
शहरों में विरोध का दायरा बढ़ता गया
और आखिरकार बैंजामिन नेतन्याहू को
कहना पड़ा कि वह विवादास्पद बन

इन न्यायिक सुधार कानूनों पर आयी रूप से रोक लगा रहे हैं। ने कहा कि जब बातचीत के में से गृहुद्धरु से बचने का विकल्प है, तो मैं बातचीत के लिए समय ल लेता हूँ। यह राष्ट्रीय जिम्मेदारी से ऐलान कैसे बाद अब सड़कों से भी लॉटैने लगे हैं और इसे लोकतंत्र गढ़ी जीत के तौर पर देखा जा रहा नहीं भी देश सच्चे अर्थों में तभी तात्परिक रह सकता है, जब वहां पर अंकुश लगाने की व्यवस्था इस व्यवस्था को स्वतंत्र पालिका, मजबूत विपक्ष और अंतिक अधिकारों से ही बनाया जा गा है। इनमें से कोई भी पक्ष नहीं हो तो लोकतंत्र पर आंच आने वाली है, सत्ता के निरंकुश होने का बढ़ने लगता है। इजरायल में

जिजीविंग, निर्वाचन और आशावार्ता सभ्यता और के विभिन्न सेवा पर मूल्यों की मूल्यों का विस्तृत मिल जाए, तो फिर ये रोकना कठिन हो जाता है। देशों ने तानाशाही का जा भुगता है, वह दुनिया ने भी उत्तर कोरिया में सत्ता के लोगों पर भारी पड़ रही बढ़क किम जोंग ने 2 लाख याबादी वाले शहर हेसन में बात के लिए कड़ा नगा दिया ताकि सैनिकों ने कल की जो 653 गोलियों द्वारा झौंकी हैं।

संजीव ठाकुर विकास के क्रम में धन के प्रयोग को भी महसूस की गई है कि निवृत्ति,

यह तो सच बात है

सभ्यता का सतत विकास उसका अद्यता जिज्ञासा, उल्कट उत्साह, जिजीविशा, निरंतर उन्नति की भूख और आशावादिता का प्रतिफल है। सभ्यता और संस्कृति की सुविधा के विभिन्न सोपानों में समय-समय पर मूल्यों की स्थापना और पुराने मूल्यों का विस्थापन एक सांख्यत सत्य की तरह है। परिवर्तन प्रकृति का आधारभूत नियम है। विकास में धन की आवश्यकता अवश्य होती है पर और धन का अतिरिक्त विकास की दिशा को दिश्मित भी कर सकता है। इसके अलावा परिस्थितियों, आवश्यकताओं, दर्शन तथा अर्थ एवं धार्मिक स्थापनाओं के अनुरूप ही समकालीन समाज का दृष्टिकोण और जीवन दर्शन निरंतर विकासवान होता है। आदिकाल से मूल्य का मामासा एवं उसका निरंतरता मानवी जीवन से जुड़े अंतर्गत पहलुओं को उजागर करती है। सत्य को सिद्धांत के रूप में भी देखा गया है। मानवी जीवन दर्शन में धन और सत्य दोनों कारकों का प्राचीन काल से ही पर्याप्त महत्व रहा है। धन का महत्व है पर धनबल सब कुछ नहीं है। सत्य एक सार्वभौमिक जीवन दर्शन है, इसे धन बल की मिथ्या कभी नष्ट अथवा विलोपित नहीं कर सकती है। धन बहुत कुछ है पर सब कुछ नहीं। सत्य सिद्धांत के बिना धन की विवेचना में मीमांसा अधीरी तथा महत्वहीन है। गलत तरीके से कमाया गया धन मनुष्य के चरित्र में उजियारे दिन के बाद घनघोर तमस की तरह है। सत्य जीवन का सार्वकालिक उजाला है। यह बात भाग विलास का प्राथमिकता दिए जाने के कारण धन पर सत्य व नैतिक मूल्यों को बरीयता दी जाने की परंपरा रही है। वेद तथा पुराणों पर भी सत्य एवं नैतिकता के व्यवहारिक पक्ष को उजागर करते हुए लिखा गया है कि 'सत्य का मुख सोने के पात्र से ढका हुआ है, धन जब मुखर होता है तो सत्य नेपथ्य में होता है। सत्य तब मुखर होता है जब धनबल का अतिरिक्त होने लगता है। धनबल मिथ्या है, सत्य शाश्वत और परंपरागत अनुवांशिक शक्ति है। भारतीय संस्कृत एवं परंपरा सत्य के मूल्य को सर्वोत्कृष्ट है उस सर्वोच्च मानती है। इसे मन वचन और कर्म में अद्वैत के स्तर तक निश्चित अकाद्य और सदैव अपरिवर्तनीय ही माना गया है।

